اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दामत बरकातुहुमुल आलिया

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **नमाज़ की बरकतें**
सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म **1444** हि., फ़रवरी **2023** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नमाज़ की बरकतें

येह रिसाला (**नमाज़ की बरकतें**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

(येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़हा 70 ता 84 से लिया गया है।)

नमाज़ की बरकतें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से कहा कि **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : "ऐ मुहम्मद ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूं ?" (نسائی، ص222، حدیث:1292)

दुखों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढ़ो जो हाज़िरी की तमन्ना है तो दुरूद पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

एक साहिब से जब गुनाह हो गया

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है : एक साहिब से एक (सग़ीरा या'नी छोटा) गुनाह हो गया, बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की। इस पर (पारह 12, **सूरए हूद** की) आयत (नम्बर 114) नाज़िल हुई :

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ط اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ط ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ﴿۱۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो, दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के हिस्सों में, बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, येह नसीहत है, नसीहत मानने वालों को।

उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह ख़ास मेरे लिये है ? फ़रमाया : "मेरी सब उम्मत के लिये ।"

(بخاری، 1/196، حدیث:526) (बहारे शरीअ़त, 1/435)

आयत की तफ़्सीर : इस आयते मुक़द्दसा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि दिन के दोनों कनारों से सुब्ह़ व शाम मुराद हैं, ज़वाल से क़ब्ल का वक़्त सुब्ह़ में और बा'द का शाम में दाख़िल है, सुब्ह़ की नमाज़ फ़ज्र और शाम की नमाज़ ज़ोह्र व अ़स्र हैं, और रात के हिस्सों की नमाज़ें मग़रिब व इ़शा हैं । (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 438) (تفسیر نسفی ص٥١٦)

"**तफ़्सीर सिरात़ुल जिनान**" जिल्द 4 सफ़ह़ा 511 पर इसी आयत के तह़्त लिखा है : (आयते करीमा में बयान कर्दा) नेकियों से मुराद या येही पन्जगाना (या'नी 5 वक़्त की) नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र (या'नी बयान) हुई या इस से मुराद मुत्लक़न (या'नी हर त़रह़ के) नेक काम हैं या इस से "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ना मुराद है । (تفسیر مدارک، ص516)

छोटे गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा बनने वाली बा'ज़ नेकियां

इस आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां **नमाज़** हों या सदक़ा (व ख़ैरात) या ज़िक्र व इस्तिग़्फ़ार या और कुछ । (تفسیر خازن، 2/375) अह़ादीस में मुतअ़द्दिद ऐसे आ'माल का बयान है जो सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा (या'नी मिटने का सबब) बनते हैं । यहां उन में से चन्द एक बयान किये जाते हैं :

चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब उन गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जब कि आदमी कबीरा (या'नी बड़े) गुनाहों से बचे। (مسلم، ص118، حدیث:552) ﴾2﴿ जिस ने रमज़ान का रोज़ा रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया। (شعب الایمان، 3/310، حدیث: 3623) ﴾3﴿ उ़म्रे से उ़म्रे तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो दरमियान में हुए और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है। (بخاری، 1/586، حدیث:1773) ﴾4﴿ जिस ने इ़ल्म तलाश किया तो येह तलाश उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी। (ترمذی، 4/295، حدیث:2657)

"कफ़्फ़ारा" से क्या मुराद है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा चारों ह़दीसों में लफ़्ज़ "कफ़्फ़ारा" आया है, यहां इस से मुराद है : छोटे गुनाहों से मुआ़फ़ी मिल गई। बेशक नमाज़ निहायत अ़ज़ीमुश्शान इ़बादत है, इस की बरकत से सिर्फ़ो सिर्फ़ बद नसीब लोग ही मह़रूम रह सकते हैं। **नमाज़** जहां एक त़रफ़ ढेरों सवाब कमाने का ज़रीआ़ है, तो दूसरी त़रफ़ इसे अदा करने से सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है।

ह़ज़रते उ़स्मान ने वुज़ू कर के फ़रमाया

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़ारिस رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه एक दिन तशरीफ़ फ़रमा थे और हम भी बैठे थे कि मुअज़्ज़िन साह़िब आ गए, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने पानी मंगवा कर वुज़ू किया, फिर फ़रमाया कि मैं ने ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ वुज़ू करते देखा है और मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद

फ़रमाते हुए भी सुना कि जो शख़्स मेरे इस वुज़ू की त़रह़ वुज़ू करे फिर वोह **ज़ोह्र** की नमाज़ पढ़ ले तो **अल्लाह** पाक उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है या'नी वोह गुनाह जो फ़ज्र की नमाज़ और इस ज़ोह्र की नमाज़ के दरमियान हुए हों, फिर जब **अ़स्र** की नमाज़ पढ़ता है तो ज़ोह्र व अ़स्र के माबैन (या'नी बीच) के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर जब **मग़रिब** की नमाज़ पढ़ता है तो अ़स्र व मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर **इ़शा** की नमाज़ पढ़ता है तो उस के और मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, फिर हो सकता है कि रात भर वोह लेट कर ही गुज़ार दे और फिर जब उठ कर वुज़ू करे और **फ़ज्र** की नमाज़ पढ़े तो इ़शा व फ़ज्र के बीच के गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है और येही वोह नेकियां हैं जो बुराइयों को दूर कर देती हैं। (الاحادیث المختارۃ، 1/450، حدیث:324)

नमाज़ से गुनाह धुलते हैं

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अगर तुम में से किसी के सह़न में नह़र हो, वोह उस में हर रोज़ पांच बार ग़ुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : जी नहीं। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**नमाज़** गुनाहों को ऐसे ही धो देती है जैसा कि पानी मैल को धोता है।" (ابن ماجہ، 2/165، حدیث:1397)

ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और मैला परिन्दा (ह़िकायत)

ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام एक बार समुन्दर के कनारे कनारे तशरीफ़ लिये जा रहे थे। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने एक परिन्दा देखा जो कि समुन्दर की कीचड़ में लोटपोट हो रहा था और इस सबब से उस का बदन

मैला हो गया। फिर वोह वहां से निकल कर समुन्दर में नहाने लगा जिस से वोह फिर साफ़ हो गया, येही अ़मल उस ने पांच मरतबा किया। ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को इस काम से तअ़ज्जुब हुवा, ह़ज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने आप को ह़ैरत ज़दा देख कर कहा : येह जो आप को दिखाया गया है येह ह़ज़रते **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के नमाज़ियों की मिसाल और येह कीचड़ उन के गुनाहों की मिसाल और समुन्दर में नहाना पांच नमाज़ों की मिसाल है। (نزہۃ المجالس، 1/145 ملخصاً) या'नी जिस त़रह़ येह कीचड़ में लोटा और नहा कर पाको साफ़ हो गया इसी त़रह़ ह़ज़रते **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के गुनाहगार इन पांच नमाज़ों की वज्ह से अपने गुनाहों से पाको साफ़ हो जाएंगे।

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! हमारी किस क़दर ख़ुश क़िस्मती है कि **अल्लाह** करीम ने हम पर नमाज़ फ़र्ज़ फ़रमाई और बहुत सारा सवाब अ़त़ा करने के साथ साथ येह भी एह़सान फ़रमाया कि वोह नमाज़ की बरकत से हमारे गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया करता है। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत के इस ख़ज़ाने को जो न लूटे वोह किस क़दर मह़रूम व बद नसीब है। येह याद रहे कि नमाज़ों से जहां जहां गुनाह मुआ़फ़ होने का तज़्किरा है इस से मुराद सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाह हैं, कबीरा (या'नी बड़े) गुनाह तौबा से मुआ़फ़ होते हैं।

पढ़ कर नमाज़ साथ लो सामाने आख़िरत मह़शर में काम आएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़.....

नमाज़ी किस क़दर ख़ुश नसीब है कि वोह **नमाज़** पढ़ता है तो उस

के गुनाह धड़ाधड़ झड़ने शुरूअ़ हो जाते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सर्दियों के मौसिम में तशरीफ़ ले गए और दरख़्तों के पत्ते झड़ते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दरख़्त की दो शाख़ें पकड़ कर उन्हें हिलाया, उन से पत्ते झड़ने लगे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! मैं ने अ़र्ज़ की : लब्बैक ! **या रसूलल्लाह !** या'नी मैं ह़ाज़िर हूं ऐ **अल्लाह** पाक के रसूल ! इर्शाद फ़रमाया : "जब कोई मुसल्मान **अल्लाह** पाक की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) के लिये **नमाज़** पढ़ता है उस से गुनाह इस त़रह़ गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।"

(مسند امام احمد، 8/133، رقم:21612)

दूसरों के दरख़्त के पत्ते झाड़ने के मसाइल

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान कर्दा ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (सर्दियों के मौसिम में तशरीफ़ ले गए) के तह़्त लिखते हैं : मदीनए मुनव्वरह से बाहर किसी जंगल में और येह मौसिम ख़िज़ां का था जब कि शाख़ें हिलाने से पत्ते झड़ जाते हैं और वैसे भी पतझड़ होता रहता है। ह़दीस शरीफ़ के इस ह़िस्से (दरख़्त की दो शाख़ें पकड़ कर उन्हें हिलाया) के तह़्त फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह दरख़्त कोई जंगल का ख़ुदरौ (या'नी ख़ुद ब ख़ुद उग जाने वाला) था जिस के फल फूल पत्ते हर राहगीर (या'नी रास्ते में गुज़रने वाला) तोड़ सकता है, और हो सकता है कि दरख़्त आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपना हो या किसी ऐसे शख़्स का हो जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अ़मल शरीफ़ से राज़ी हो, वरना दूसरे के दरख़्त से बिला इजाज़त पत्ते वग़ैरा झाड़ना मम्नूअ़ है। ह़दीसे मुबारक के इस ह़िस्से (गुनाह इस त़रह़ गिरते हैं जैसे दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं) के तह़्त है : या'नी

इख़्लास की **नमाज़** मौसिमे ख़िज़ां की उस तेज़ हवा की त़रह़ है जो पतझाड़ कर देती (या'नी पत्ते गिरा देती) है (मज़ीद फ़रमाते हैं) यहां (गिर जाने या'नी मुआ़फ़ होने वाले) गुनाहों से सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाह मुराद हैं।

(मिरआतुल मनाजीह, 1/367)

नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं

सरकारे दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला शान है : "जिस वक़्त मुसल्मान नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह उस के सर पर रखे जाते हैं, जब येह सज्दे में जाता है तो सारे गुनाह गिर जाते हैं, नमाज़ी जब **नमाज़** से फ़ारिग़ होता है तो गुनाहों से पाक साफ़ हो चुका होता है।" (معجم کبیر، 6/250، حدیث:6125)

दो रक्अ़त पढ़ने से तमाम सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़

ह़ज़रते ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो **दो रक्अ़त नमाज़** पढ़े और उन में सह्व (या'नी भूल) न करे तो जो कुछ पेश्तर (इस से पहले) उस के (सग़ीरा) गुनाह हुए हैं **अल्लाह** पाक मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"

(مسند امام احمد، 8/162، حدیث:21749)

जो गुनाह किये थे नमाज़ की बरकत से मुआ़फ़

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने वुज़ू किया जैसा हुक्म है, और **नमाज़** पढ़ी जैसी **नमाज़** का हुक्म है, तो जो कुछ पहले किया है मुआ़फ़ हो गया। (ابن ماجہ، 2/164، حدیث:1396)

तज़्किरए ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अभी आप ने जो ह़दीसे पाक सुनी उस के रावी रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मश्हूर सह़ाबी,

मेज़बाने रसूल ह़ज़रते **अबू अय्यूब अन्सारी** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं । अपने प्यारे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के बारे में रसूले ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "मेरे सह़ाबा को बुरा न कहो क्यूं कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़ैरात करे तो मेरे सह़ाबा में से किसी एक के न मुद को पहुंच सकता है और न ही मुद के आधे को।" (بخاری، 2/522، حدیث:3673) **शर्ह़े ह़दीस :** या'नी मेरा सह़ाबी क़रीबन **सवा सेर जव** ख़ैरात करे और उन के इ़लावा कोई मुसल्मान ख़्वाह ग़ौस व क़ुत़्ब हो या आ़म मुसल्मान पहाड़ भर सोना ख़ैरात करे तो उस का सोना क़ुर्बे इलाही और क़बूलिय्यत में सह़ाबी के सवा सेर जव को नहीं पहुंच सकता, येह ही ह़ाल रोज़ा नमाज़ और सारी इ़बादात का है, जब मस्जिदे नबवी की नमाज़ दूसरी जगह की नमाज़ों से **50 हज़ार गुना** है तो जिन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब और दीदार पाया उन का क्या पूछना और उन की इ़बादात का क्या कहना ! इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि ह़ज़राते सह़ाबा (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) का ज़िक्र हमेशा ख़ैर से ही करना चाहिये, किसी सह़ाबी को हलके लफ़्ज़ से याद न करो, येह ह़ज़रात वोह हैं जिन्हें रब ने अपने मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की सोह़बत के लिये चुना, मेह्रबान बाप अपने बेटे को बुरों की सोह़बत में नहीं रहने देता तो मेह्रबान रब अपने नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को बुरों की सोह़बत में रहना कैसे पसन्द फ़रमाता ! (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 335 मुलख़्ख़सन) सह़ाबए किराम की फ़ज़ीलत सिर्फ़ मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत और वह़ी का ज़माना पाने की वज्ह से थी, अगर हम में से कोई 1000 साल उ़म्र पाए और तमाम उ़म्र **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी करे और ना फ़रमानी से बचे

बल्कि अपने वक़्त का सब से बड़ा आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) बन जाए तब भी उस की इ़बादत नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत के एक लम्ह़े के बराबर भी नहीं हो सकती। (مرقاۃ المفاتیح، 6/286، تحت حدیث:4699)

नाम और कुन्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदीनए मुनव्वरह में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेज़बानी (Hospitality) का शरफ़ ह़ासिल करने वाले सब से पहले ख़ुश नसीब ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه थे। आप का अस्ल नाम ख़ालिद बिन ज़ैद था जब कि कुन्यत अबू अय्यूब थी। हिजरत से क़ब्ल नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ पर बैअ़त करने वाले तक़रीबन 70 ख़ुश नसीब ह़ज़रात में आप भी शामिल थे।

(طبقات ابن سعد، 3/368، 369)

बे मिसाल अदबे मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه अपने हर अन्दाज़ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बे पनाह अदबो एह़तिराम और अ़क़ीदत व जां निसारी का मुज़ाहरा करते, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आप ने पहले पहल ऊपर की मन्ज़िल पेश की मगर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मुलाक़ातियों की आसानी का लिह़ाज़ फ़रमाते हुए) नीचे की मन्ज़िल को पसन्द फ़रमाया। एक मरतबा मकान के ऊपर की मन्ज़िल पर पानी का घड़ा टूटा तो फ़ौरन अपना लिह़ाफ़ डाल कर सारा पानी उस में ख़ुश्क कर लिया घर में एक ही लिह़ाफ़ मौजूद था जो कि अब गीला हो चुका था मगर येह गवारा न किया कि पानी बह कर नीचे की मन्ज़िल में चला जाए और रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुछ तक्लीफ़ पहुंचे।

(سیرت ابن ہشام، ص199)

कहीं बे अदबी न हो जाए

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के हां (बत़ौरे मेहमान) निचली मन्ज़िल में ठहरे और ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ऊपर की मन्ज़िल में थे, ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दिल में एक रात ख़याल आया कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर के ऊपर (छत पर) चल रहे हैं, येह ख़याल आते ही आप एक जानिब हट कर सो गए, फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "निचली मन्ज़िल में ज़ियादा सहूलत है।" ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मैं उस छत पर नहीं रह सकता जिस के नीचे आप तशरीफ़ फ़रमा हों। तब आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल पर तशरीफ़ ले आए और ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ निचली मन्ज़िल में आ गए। (مسلم، ص874، حدیث: 5358)

बरतन से बरकतें लेते

ह़ुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ खाना भेजते और जब बरतन वापस आते तो पूछते कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंग्लियां किस जगह से लगी हैं ? बरकत ह़ासिल करने के लिये पाकीज़ा उंग्लियां लगी हुई जगह से लुक़्मा उठाते और खाना खाते। (مسند احمد، 9/35، حدیث: 23576)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक बार सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मकाने आ़लीशान पर रात भर पहरा दिया, सुब्ह़

हुई तो दुआए मुस्तफ़ा यूं मिली : "ऐ **अल्लाह** ! तू अबू अय्यूब को अपने हिफ़्ज़ो अमान में रख जिस तरह इस ने मेरी निगहबानी करते हुए रात गुज़ारी।"

(سیرت ابن ہشام، ص442)

अल्लाह ! तुम से हर ना पसन्दीदा बात दूर कर दे

हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा सफ़ा व मर्वह की सई फ़रमा रहे थे कि दाढ़ी मुबारक पर एक पर गिरा, हज़रते **अबू अय्यूब** अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه तेज़ी से आगे बढ़े और दाढ़ी मुबारक से उस पर को ले लिया। शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को दुआ दी : **अल्लाह** पाक तुम से हर ना पसन्दीदा बात दूर कर दे।

(معجم کبیر، 4/172، حدیث:4048)

इन्तिक़ाले बा कमाल

हज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه जब मुबारक ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में सख़्त बीमार हो गए तो मुजाहिदीने इस्लाम से फ़रमाया : मुझे मैदाने जंग में ले जाना और अपनी सफ़ों में लिटाए रखना, जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मेरी लाश को क़ल्ए की दीवार के क़रीब दफ़्न कर देना। चुनान्चे सिन 51 हिजरी में दौराने जिहाद आप رَضِیَ اللهُ عَنْه को क़ुस्तुन्तीनिय्या के क़ल्ए की दीवार के क़रीब दफ़्न कर दिया गया। इब्तिदा में अन्देशा था कि शायद नसरानी क़ब्रे मुबारक को खोद डालें मगर उन पर ऐसी हैबत तारी हुई कि मज़ारे अक़्दस को हाथ भी न लगा सके और यक़ीनन येह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक दुआ का असर था कि आप ज़िन्दगी भर मुसीबतों और ग़मों से महफ़ूज़ रहे। और बा'दे वफ़ात भी सदियों तक नसारा आप की क़ब्रे मुबारक की हिफ़ाज़त और निगरानी

करते रहे हत्ता कि कुस्तुन्तीनिय्या पर मुसल्मानों ने फ़त्ह का झन्डा गाड़ दिया। आज भी तुर्की हुकूमत के ज़ेरे ख़िदमत आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मज़ारे अक़्दस इसी आन बान और शान के साथ आने वालों के दिलों में सुरूर और आंखों में ठन्डक का सामान लिये हुए है। (करामाते सहाबा, स. 182 माख़ूज़न)

मज़ार शरीफ़ की बरकत

क़ह़त़ साली के ज़माने में लोग ह़ज़रते **अबू अय्यूब** अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर बारिश त़लब करते तो **अल्लाह** पाक आप के तुफ़ैल बारिश बरसा देता। (طبقات ابن سعد، 3/370)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अबू अय्यूब का सदक़ा, इलाही ! मग़्फ़िरत फ़रमा हमें दोनों जहानों की इनायत आ़फ़ियत फ़रमा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इख़्लास के साथ दो रक्अ़त पढ़ने वाला जहन्नम से आज़ाद

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो तन्हाई में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े कि **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्तों के सिवा कोई न देखे उस के लिये जहन्नम से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाती है।

(کنز العمال، 4/125، حدیث:19015)

नेकियां छुपाने के फ़ज़ाइल

(4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! बन्दे को चाहिये कि वोह जिस क़दर हो सके अपनी नेकियां छुपाए। अपने नफ़्ल रोज़े, नमाज़, ह़ज व उ़म्रह, सदक़ा व ख़ैरात, दीनी ख़िदमात वग़ैरा का बिला वज्ह ढंडोरा नहीं पीटना चाहिये।

4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ आदमी का ऐसी जगह नफ़्ल पढ़ना जहां लोग उसे न देखते हों, लोगों के सामने अदा की जाने वाली 25 नमाज़ों के बराबर है। (کنزالعمال، 12/3) ﴿2﴾ पोशीदा (या'नी छुपा कर दिया जाने वाला) सदक़ा रब के ग़ज़ब को बुझाता है। (معجم کبیر، 421/19، حدیث:1018) ﴿3﴾ पोशीदा (छुप कर किया जाने वाला) अ़मल ए'लानिया अ़मल से 70 गुना अफ़्ज़ल है। (مسند فردوس، 129/3، حدیث:4348) ﴿4﴾ पोशीदा (छुप कर किया जाने वाला) अ़मल ए'लानिया अ़मल से अफ़्ज़ल है।

(مسند فردوس، 347/2، حدیث:3572) (जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, 1/176 मुख़्तसरन)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ज करने वाले मोह़रिम जैसा सवाब

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो त़हारत (या'नी वुज़ू या ग़ुस्ल) कर के अपने घर से **फ़र्ज़ नमाज़** के लिये निकला उस का अज्र ऐसा है जैसा **ह़ज** करने वाले मोह़रिम (या'नी एह़राम बांधने वाले) का और जो **चाश्त** के लिये निकला उस का अज्र **उ़म्रह** करने वाले की मिस्ल है और एक **नमाज़** से दूसरी नमाज़ तक कि दोनों के दरमियान में कोई लग़्वियात न हों इ़ल्लिय्यीन में लिखी जाती है (या'नी दरजए क़बूल को पहुंचती है)।"

(ابوداود، 231/1، حدیث:558) (बहारे शरीअ़त, 1/438)

मौला का दरवाज़ा खटखटाना

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से

रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : इन्सान **नमाज़** के दौरान गोया बादशाह के दरवाज़े पर दस्तक दे (या'नी Knock कर) रहा होता है और जो शख़्स हमेशा किसी बादशाह का दरवाज़ा खटखटाता रहता है तो वोह कभी न कभी खुल ही जाता है। (مسند فردوس، 1/201، حدیث:760)

मुझे ग़ुस्ल का पता ही न था

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! दिल लगे या न लगे ख़ूब नमाज़ें पढ़े जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه एक न एक दिन हमारी नमाज़ें ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के नूर से मा'मूर हो ही जाएंगी। आइये एक "मदनी बहार" सुनते हैं : एक नौ जवान इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने से पहले नमाज़ें तर्क करने, मां बाप की ना फ़रमानी करने और फ़िल्में ड्रामे देखने के आ़दी थे, ख़ुद उन का कहना है कि "मुझे ग़ुस्ल का पता ही न था ह़ालां कि मेरी उ़म्र 16 साल हो चुकी थी।" उन पर **अल्लाह** पाक का करम यूं हुवा कि उन के मह़ल्ले के इस्लामी भाई ने उन को रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में करने की तरग़ीब दिलाई, मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ए'तिकाफ़ करने पहुंचे तो वहां का माह़ोल उन्हें अच्छा लगा और उन्हों ने वहां ग़ुस्ल करने का त़रीक़ा और दीगर शर्ई मसाइल भी सीखे और गुनाहों से तौबा कर ली। दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते करते उन्हें ह़ल्क़ा सत्ह़ पर मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार बनने की सआ़दत भी मिली।

भाई गर चाहते हो "नमाज़ें पढ़ूं", मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है "आगे बढ़ूं", मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते पीछे नमाज़ पढ़ते हैं

हज़रते ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने सुना है कि **अल्लाह** पाक तीन आदमियों के बारे में फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र करता है : ﴿1﴾ एक वोह आदमी जो चट्यल (या'नी हमवार) मैदान में अज़ानो इक़ामत कह कर अकेला **नमाज़** पढ़ता है, **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दे को देखो ! जो तन्हा **नमाज़** पढ़ रहा है, मेरे सिवा इसे कोई नहीं देख रहा, जाओ ! सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के पीछे **नमाज़** अदा करो ﴿2﴾ दूसरे उस आदमी पर जो रात को उठ कर अकेले में **नमाज़** पढ़ता है, सज्दे में जाए और इस ह़ालत में (अगर इत्तिफ़ाक़ से) नींद आ जाए तो **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मेरे बन्दे को देखो ! इस की रूह़ मेरे पास और जिस्म मेरी बारगाह में सज्दे में है ﴿3﴾ तीसरे उस आदमी पर जो ज़ोरों की जंग में साबित क़दम रहा यहां तक कि शहीद हो गया। (تنبیہ الغافلین، ص290)

अज़ान दे कर तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला चरवाहा

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! इस ह़दीसे पाक से कोई येह न समझे कि अकेले नमाज़ पढ़ना जमाअ़त से **नमाज़** पढ़ने के मुक़ाबले में अफ़्ज़ल है, हरगिज़ ऐसा नहीं। येह फ़ज़ीलत तो ऐसे जंगल, बयाबान और पहाड़ वग़ैरा के लिये है कि जहां बन्दा तन्हा हो और कोई ऐसी मस्जिद भी नहीं कि जिस में जा कर बा जमाअ़त **नमाज़** अदा कर सके, इस की ताईद में "**सुनने अबू दावूद**" की एक ह़दीसे मुबारका पेश की जाती है चुनान्चे ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं, ताजदारे मदीना صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**तुम्हारा** रब उस बकरी के चरवाहे से ख़ुश होता है जो पहाड़ की चोटी पर हो, **नमाज़** की अज़ानें दे और **नमाज़** पढ़े। **अल्लाह** पाक फ़रमाता है कि मेरे इस

बन्दे को देखो ! अज़ान देता है और **नमाज़** क़ाइम करता है, और मुझ से डरता है, बेशक मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया और इस को जन्नत में दाख़िल करूंगा।''

(ابوداود، 2/7، حدیث:1203)

शर्हे ह़दीस : ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ''मिरआत'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 415 पर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि नमाज़े पन्जगाना के लिये अज़ान बहर ह़ाल दे अगर्चे जंगल में अकेले नमाज़ पढ़े। ''(साह़िबे) मिरक़ात'' ने फ़रमाया कि अज़ान की बरकत से जिन्नात व फ़िरिश्ते भी उस के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और उसे जमाअ़त का सवाब मिलता है। तक्बीर में इख़्तिलाफ़ है मगर ह़क़ येह है कि तक्बीर भी कहे क्यूं कि अज़ान व तक्बीर में नमाज़ की इत्तिलाअ़ के इलावा और बहुत से फ़ाएदे हैं। ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है) के तह़्त लिखते हैं : (ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :) (मत़लब येह कि) फ़िरिश्तों से अम्बिया व औलिया की रूह़ों से (مرقاۃ، 2/360، تحت الحدیث:665 ماخوذاً) बल्कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है)। और इस ह़िस्से (मेरे इस बन्दे को देखो !) के तह़्त लिखते हैं : मा'लूम हुवा की फ़िरिश्तों और नबियों वलियों की रूह़ों में येह त़ाक़त है कि एक जगह रह कर सारे आ़लम को देख लें कि परवर्दगार इन से फ़रमाता है : ''इस पहाड़ पर छुपे बन्दे को देखो !''

सातों आस्मानों के फ़िरिश्तों की गिनती के बराबर नेकियां

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद अह़मद रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी किताब ''**मसाइले नमाज़**'' में लिखते हैं : **नमाज़** में सात आस्मान के फ़िरिश्तों की इ़बादत है, आस्माने अव्वल ﴿1﴾ के (फ़िरिश्ते) **क़ियाम** में

(या'नी खड़े) हैं, आस्माने दुवुम ﴾2﴿ के **रुकूअ़** में, सिवुम ﴾3﴿ के **सज्दे** में, चहारुम ﴾4﴿ के **क़ा'दे** में, पन्जुम ﴾5﴿ के तस्बीह़ (या'नी पाकी बयान करने) में, छटे ﴾6﴿ के **तह्लील** (या'नी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه के विर्द) में सातवें ﴾7﴿ के **तम्जीद** (या'नी **अल्लाह** पाक की बुज़ुर्गी और ता'रीफ़ बयान करने) में। जब मोमिन आदमी दो रक्अ़त **नमाज़** मज़्कूरा अफ़्आ़ल व अज़्कार (या'नी बताए हुए त़रीक़े और पढ़ने वाली चीज़ों) से अदा करता है, **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : "इस के आ'माल नामे में सात आस्मान के फ़िरिश्तों की गिनती के मुत़ाबिक़ नेकियां लिखो।" इमाम नज्मुद्दीन उ़मर नसफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "**ख़साइल**" में फ़रमाते हैं कि ज़मीनों को भी इस पर क़ियास (या'नी अन्दाज़ा) करना चाहिये, दरख़्त और मीनार और पहाड़ **क़ियाम** में हैं और चारपाए (या'नी चार पाउं वाले जानवर) **रुकूअ़** में और ह़शरातुल अर्द़ (या'नी ज़मीन से उठने वाले मसलन कीड़े मकोड़े) **सज्दे** में, और दीवारें और टीले और काह (या'नी सूखी घास) और रेग (या'नी रेत) वग़ैरा **क़ा'दे** में। क़ुरआने करीम की आयते करीमा इसी दलील पर है :

﴾وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ﴿ (پ15، بنی اسرائیل:44)

"**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले, हां तुम उन की तस्बीह़ समझ नहीं सकते।"

(मसाइले नमाज़, स. 26 मुलख़्ख़सन)

पढ़ते रहो नमाज़ ख़ुदा ही के वासित़े ! कैसी फ़ज़ीलतें हैं नमाज़ी के वासित़े !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह पाक ! हमें तमाम तर ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब के साथ नमाज़ें अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हर इबादत से बरतर इबादत नमाज़

हर इबादत से बरतर इबादत नमाज़
सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़

क़ल्बे ग़मगीं का सामाने फ़रहत नमाज़
है मरीज़ों को पैग़ामे सिह्हत नमाज़

नारे दोज़ख़ से बेशक बचाएगी येह
रब से दिलवाएगी तुम को जन्नत नमाज़

प्यारे आक़ा की आंखों की ठन्डक है येह
क़ल्बे शाहे मदीना की राहत नमाज़

भाइयो ! गर ख़ुदा की रिज़ा चाहिये
आप पढ़ते रहें बा जमाअ़त नमाज़

आओ मस्जिद में झुक जाओ रब के हुज़ूर
तुम को दिलवाएगी हक़ से रिफ़अ़त नमाज़

ऐ ग़रीबो ! न घबराओ सज्दे करो
देगी बरकत, मिटाएगी ग़ुर्बत नमाज़

सब्र से और नमाज़ों से चाहो मदद
पूरी करवाए हर एक हाजत नमाज़

ख़ूब नफ़्लों के सज्दों में मांगो दुआ
पूरी करवाएगी रब से हाजत नमाज़

क्यूं नमाज़ी जहन्नम में जाए भला !
इस को दिलवाएगी बाग़े जन्नत नमाज़

जो मुसल्मान पांचों नमाज़ें पढ़ें
ले चलेगी उन्हें सूए जन्नत नमाज़

होगी दुन्या ख़राब आख़िरत भी ख़राब
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़

बे नमाज़ी जहन्नम का हक़दार है
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़

क़ब्र में सांप बिच्छू लिपट जाएंगे
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़

सह सकोगे न दोज़ख़ का हरगिज़ अ़ज़ाब
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़

देखो ! अल्लाह नाराज़ हो जाएगा
भाइयो ! तुम कभी छोड़ना मत नमाज़

या ख़ुदा तुझ से अ़त्तार की है दुआ
मुस्तफ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़

(वसाइले फ़िरदोस, स. 22-23)